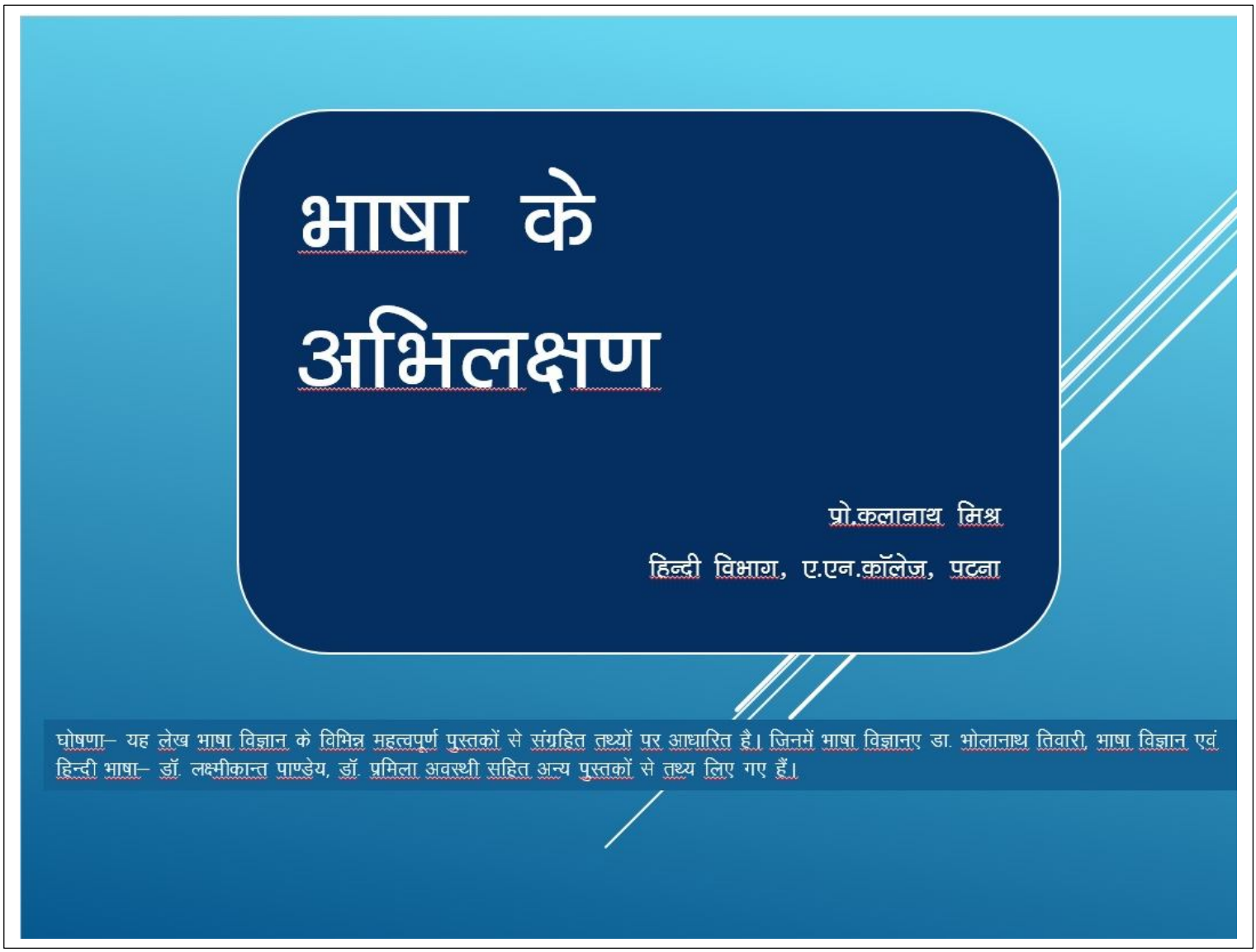

आइए आज हम लोग भाषा के अभिलक्षण पर विचार करते हैं। अभिलक्षण का अर्थ है मूलभूत लक्षण। अंग्रेजी में कहेंगे तो 'property of the language' इसके तहत हम लोग जानेंगे कि कि भाषा की मूलभूत विशेषताएं कौन्कौन सी हैं। ये अभिलक्षण

ही मानवीय भाषा को अन्य भाषिक संदर्भों से पृथक करते हैं। विद्वानों ने भाषा के सात अभिलक्षण बताए हैं। 1.यादृच्छिकता 2.सृजनात्मकता 3अनुकरणग्राह्यता 4परिवर्तनशीलता 5 विविक्तता 6 द्वैतता 7 भूमिकाओं का परस्पर परिवर्तन 8 अंतरणता 9 असहजवृत्तिकता।

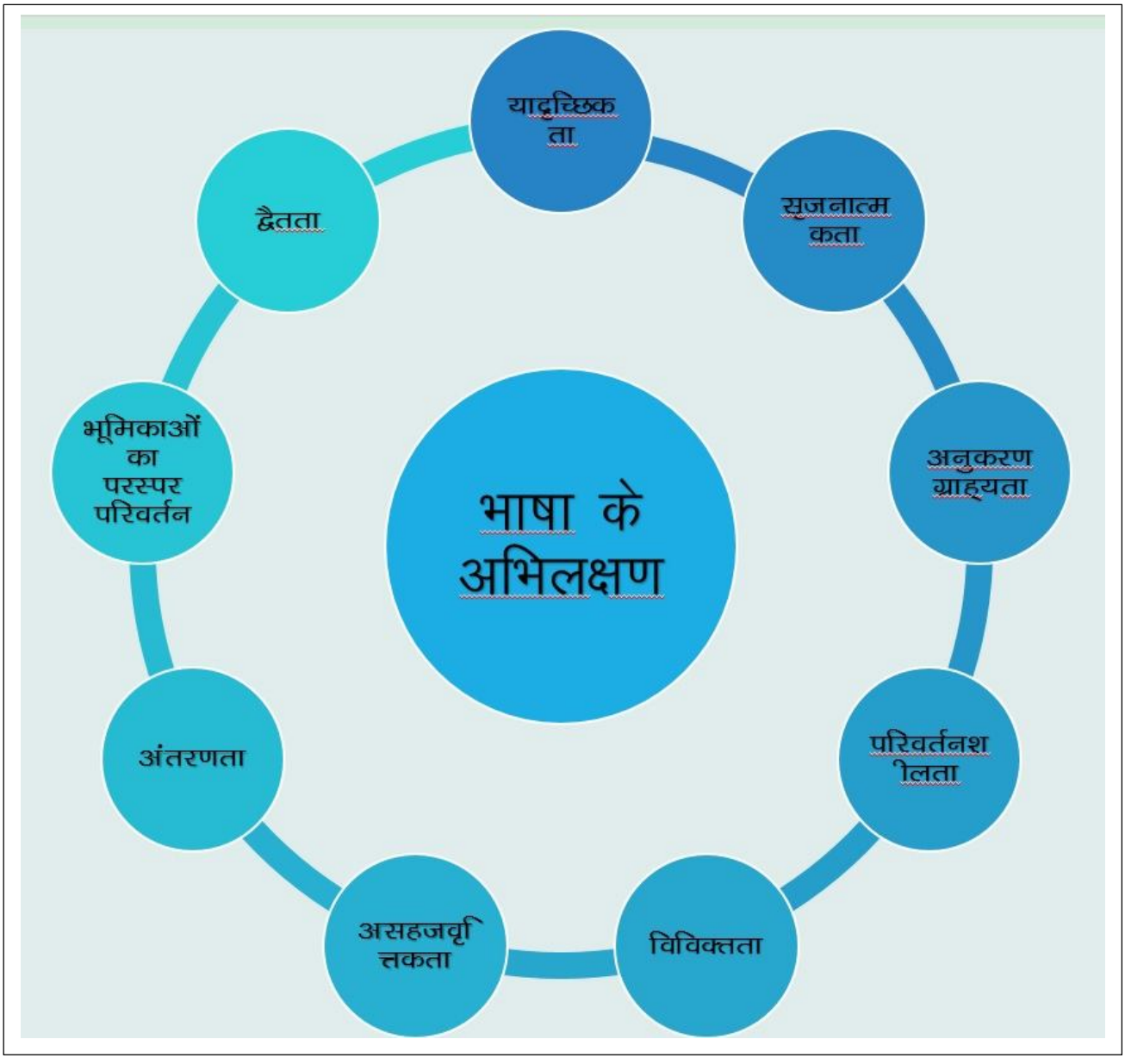

उक्त नौ अभिलक्षण भाषा के दिए गए हैं। इस तालिका में इन अभिलक्षणों को दर्शाया गया है।

अब आइए इन अभिलक्षण ऊपर हम एक-एक कर विचार करते हैं।

1यादृच्छिकता से तात्पर्य है माना हुआ। जब एक विशेष समुदाय किसी भाव या वस्तु के लिए कोई विशेष शब्द निर्धारित कर लेता है तो वह एक प्रकार से इच्छा अनुसार माना हुआ संबंध होता है। भाषा में यह यादृच्छिकता शब्द और व्याकरण दोनों रूपों में मिलती है। अतः यह एक महत्वपूर्ण अभिलक्षण है।

अब आइए सर्जनात्मकता पर विचार करते हैं। मानवीय भाषा की मूलभूत विशेषता उसकी सृजनात्मकताहै। सीमित शब्दों को ही भिन्न-भिन्न ढंग से प्रयुक्त कर वह अपने भावों को अभिव्यक्त करता है। यह भाषा की सृजनात्मक क्षमता के कारण ही संभव हो पाता है।

अनुकरणग्राह्यता मनुष्य भाषा को समाज में अनुकरण से धीरेधीरे सीखता है। अनुकरण ग्राह्य होने के कारण ही मनुष्य एक से अधिक भाषाओं को भी सीख लेता है। भाषा की इसी शक्ति को अनुकरणग्राह्यता कहते हैं।

परिवर्तनशीलता का प्रयोग इस अर्थ में किया जाता है कि भाषा के शब्द एक लम्बी यात्रा तय करते करते अथवा कह सकते हैं कि दूसरे युग तक आते-आते नया रूप ले लेते है। पुरानी भाषा में इतने परिवर्तन हो जाते हैं कि नई भाषा का एक प्रकार से उदय हो जाता है। इसे समझने के लिए मैं उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ कि संस्कृत से लेकर हिंदी तक की विकास यात्रा भाषा के परिवर्तनशीलता के कारण ही संभव हो सका है।

विविक्तता मानव भाषा की संरचना कई घटकों से होती है। ध्वनि से शब्द और शब्द से वाक्य विच्छेद घटक होते हैं। इस प्रकार अनेक इकाइयों का योग होने के कारण भाषा का यह अभिलक्षण विविक्त कहा जाता है।

द्वैतता भाषा में वाक्य के दो स्तर होते हैं। प्रथम स्तर पर सार्थक इकाइयाँ होती हैं और द्वितीय स्तर पर निरर्थक इकाइयाँ होती हैं। अर्थात कोई भी वाक्य इन दो स्तरों के योग से बनता है। अतः इसे द्वैतता कहा जाता है। यहाँ यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि भाषा में प्रयुक्त सार्थक इकाइयों को रूपिम और निरर्थक इकाइयों को स्वणिम कहा जाता है।

भूमिकाओं का पारस्परिक परिवर्तन भी भाषा का एक विशेष अभिलक्षण है। भाषा के दो पक्ष होते हैं, एक वक्ता और दूसरा पक्ष श्रोता होता है। वार्ता के समय दोनों पक्ष अपनी अपनी भूमिका परिवर्तित करते रहते हैं। वक्ता श्रोता बनता है, और श्रोता भी पुनः वक्ता की भूमिका में आ जाता है। अतः इसे ही भूमिका का पारस्परिक परिवर्तन कहते हैं।

अंतरणता से तात्पर्य है भाषा की वह क्षमता जिससे हम भाषा में भविष्य एवं अतीत की सूचना देने की क्षमता रखते हैं। मानव भाषा भविष्य एवं अतीत के साथ-साथ दूरस्थ देश का भी उल्लेख कर सकता है। इस प्रकार देश काल में अंतरण की इस विशेषता के कारण ही भाषा के इस लक्षण को अंतरण ता कहते हैं।

असहजवृत्तिकता मानव के भाषा का विशेष गुण है। मानव के अतिरिक्त अन्यजीवों में मात्र सहज वृत्ति जैसे आहार] निद्रा] भय आदि से ही संबंध होता है। इसके लिए उनके पास अपने-अपने कुछ ध्वनि होते हैं। किंतु मानवीय भाषा सहज वृत्ति नहीं होती है। वह सहजवृत्तियों से संबंधित नहीं होती है। उसमें इनके अतिरिक्त भी

विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता होती है इसीलिए इसे असहजवृत्तिकता कहा जाता है।